'कौल-कल्पतरु'
चण्डी

षोडश-लक्ष्मी-स्वरूपा
श्रीललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-पूजा

प्रकाशक : परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

नित्य पठनीय श्री-सूक्त का मूल-पाठ

ॐ हिरण्य-वर्णां हरिणीं सुवर्ण-रजत-स्रजाम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।१

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ।।२

अश्व-पूर्वां रथ-मध्यां हस्ति-नाद-प्रबोधिनीम् । श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ।।३

कांसोऽस्मि तां हिरण्य-प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्म - वर्णां, तामिहोपह्वये श्रियम् ।।४

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं, श्रियं लोके देव-जुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्ये, अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ।।५

आदित्य-वर्णे तपसोऽधिजातो, वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु, मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ।।६

उपैतु मां देव-सखः कीर्तिश्च मणिना सह । प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ।।७

क्षुत्-पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् । अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ।।८

गन्ध-द्वारां दुराधर्षां नित्य-पुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्व-भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।९

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।।१०

कर्दमेन प्रजा-भूता मयि सम्भव-कर्दम!। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्म-मालिनीम् ।।११

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे । नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।।१२

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्म-मालिनीम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।१३

आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेम-मालिनीम् । सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।१४

तां म आवह जातवेदो, लक्ष्मीमनप - गामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो, दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ।।१५

।। फल-श्रुति ।।

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा, जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
श्रियः पञ्च - दशर्चं च, श्रीकामः सततं जपेत् ।।१६

'चण्डी' : विशेष प्रस्तुति

श्री षोडश-लक्ष्मी-ऐक्य-रूपिणी

श्रीललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-पूजा

★ श्री सौन्दर्य-लक्ष्मी-पूजा ★

★ श्री सौभाग्य-लक्ष्मी-पूजा ★

★ श्री कीर्ति-लक्ष्मी-पूजा ★

★ श्री वीर-लक्ष्मी-पूजा ★

★ श्री विजय-लक्ष्मी-पूजा ★

★ श्री सन्तान-लक्ष्मी-पूजा ★

★ श्री मेधा-लक्ष्मी-पूजा ★

★ श्री विद्या-लक्ष्मी-पूजा ★

★ श्री तुष्टि-लक्ष्मी-पूजा ★

★ श्री पुष्टि-लक्ष्मी-पूजा ★

★ श्री प्रज्ञा-लक्ष्मी-पूजा ★

★ श्री शक्ति-लक्ष्मी-पूजा ★

★ श्री शान्ति-लक्ष्मी-पूजा ★

★ श्री साम्राज्य-लक्ष्मी-पूजा ★

★ श्री आरोग्य-लक्ष्मी-पूजा ★

★ श्री ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-पूजा ★

सम्पादक

रमादत्त शुक्ल

ऋतशील शर्मा

प्रकाशक

पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक :

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ • ०५३२-२५०२७८३

२५/-

षोडश-लक्ष्मी-ऐक्य-रूपिणी

श्री ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी की पूजा

भगवती ललिता की उपासना को भारत-वर्ष में अति महत्त्व-पूर्ण स्थान प्राप्त है। जगद्-गुरु आदि-शङ्कराचार्य द्वारा स्थापित चारों मठों में इन्हीं का 'पूजन-तर्पण' होता है। इसके अतिरिक्त 'काश्मीर' से लेकर 'कन्या-कुमारी' तक लगभग पूरे भारत में इन्हीं या इनके उप-भेदों के 'पूजन-तर्पण' का व्यापक प्रचार है।

भगवती ललिता कई नामों से प्रसिद्ध हैं–१. महा-त्रिपुर-सुन्दरी, २. कामेश्वरी, ३. राज-राजेश्वरी, ४. पञ्चदशी, ५. त्रिपुरा, ६. श्रीविद्या आदि उन्हीं के कल्याण-प्रद नाम हैं।

भगवती ललिता का 'पूजन-तर्पण' बहुत विस्तार के साथ होता है। इसके लिए कई तन्त्र-ग्रन्थ निर्देशित हैं, जैसे–श्री श्रीविद्यार्णव तन्त्र, परशुराम-कल्प-सूत्र, तत्त्व-चिन्तामणि, तन्त्र-राज तन्त्र, त्रिपुरा-सार-समुच्चय, वरिवस्या रहस्य, सौभाग्योदय, नित्योत्सव आदि-आदि। इन ग्रन्थों का अध्ययन करना एक कठिन कार्य है। इसके अतिरिक्त इन ग्रन्थों में जो 'साधना-क्रम' दिया गया है, वह भी बहुत विस्तृत है। आज के साधकों के लिए उक्त विस्तृत 'पूजन-तर्पण' सम्भव नहीं है। अतएव अधिकतर लोग 'श्रीललिता-सहस्त्र-नाम', 'श्रीललिता-त्रिशती' आदि स्तोत्रों से ही आज-कल 'श्रीयन्त्र' पर 'कुंकुम-गन्धाक्षत' आदि चढ़ाकर 'पूजन-तर्पण' करते हैं।

प्रस्तुत 'षोडश-लक्ष्मी-ऐक्य-रूपिणी श्रीललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-पूजा' भी श्रीललिता त्रिशती के तीन सौ (३००) नामों पर आधारित है। इसकी विशेषता यह है कि यह 'पूजा' प्रसिद्ध श्री-सूक्त के मन्त्रों एवं १६ कलाओं, १६ नित्याओं, १६ चक्रेश्वरियों, १६ शक्तियों तथा १६ लक्ष्मियों के ध्यान, आवाहन, पूजन आदि से युक्त है। स्पष्ट है कि भगवती श्री ललिता का प्रस्तुत 'पूजन-तर्पण' जितना संक्षिप्त है, उतना ही भगवती ललिता की साधना के विविध अङ्गों से युक्त भी है। इसके द्वारा आज के समय में भी साधक-गण भगवती ललिता की कृपा प्राप्त कर अपने जीवन को धन्य कर सकते हैं।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि प्रस्तुत 'पूजा' में भगवती श्री ललिता के जिन ३०० मन्त्र-मय नामों का उल्लेख 'मन्त्र-पुष्पाञ्जलि' के रूप में हुआ है, उनकी रचना स्वयं भगवती ललिता और श्रीकामेश्वर शिव द्वारा हुई है। भगवान् हयग्रीव से इन नामों को अगस्त्य मुनि ने प्राप्त किया था। स्वयं आदि-शङ्कराचार्य जी ने इन नामों का भाष्य कर हम भारत-वासियों को इनके द्वारा 'पूजन-तर्पण' करने की प्रेरणा दी है। अतएव भगवती श्रीललिता की प्रस्तुत 'पूजा-विधि' हम सभी के लिए अत्यन्त उपयोगी है। –ऋतशील शर्मा

संक्षिप्त पूजा-विधि

- किसी शुभ दिन पवित्र आसन पर पूर्वाभिमुख होकर बैठें। फिर 'आचमन' कर 'प्राणायाम' करें।
- तब 'सङ्कल्प' पढ़ें। 'सङ्कल्प' के अन्त में कहें-'श्रीललिताम्बा-प्रसाद-सिद्धि द्वारा सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थं श्रीललिता-पूजनं तर्पणं करिष्ये।'
- इसके बाद 'गुरु, गणपति' आदि का स्मरण करें।
- फिर भगवती ललिता के चित्र, मूर्ति या श्री-यन्त्र के सम्मुख हाथ जोड़कर आगे प्रस्तुत 'षोडश-लक्ष्मी-ऐक्य-रूपिणी श्रीललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी' की पूजा करें।

श्री सौभाग्य-लक्ष्मी-पूजा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

तां म आवह जात-वेदो, लक्ष्मीमनप-गामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं, गामश्वं पुरुषानहम्।।

श्रीसूक्त-संस्तुतां 'आ'-कार प्राकृतिक 'श्रीमानदा'-कलात्मिकां,
'श्रीभग-मालिनी'-नित्या-स्वरूपिणीं 'श्रीसर्वाशा-परि-पूरक'-चक्रेश्वरीं,
'श्रीबुद्ध्याकर्षिणी'-शक्ति-रूपिणीं 'श्रीनारायण'-वक्ष-स्थल-निवासिनीं,
सर्व-मङ्गल-देवतां 'श्रीसौभाग्य-लक्ष्मीं'
ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।
पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, मधुपर्कं समर्पयामि। पुनः आचमनीयं समर्पयामि।
स्नानं, वस्त्रं, आभूषणं, गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि। पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ए-कार-रूपायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री एकाक्षर्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री एकानेकाक्षराकृत्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री एतत्-तदित्यनिर्देश्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री एकानन्द-चिदाकृत्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री एवमित्यागमाबोध्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री एक-भक्ति-मदर्चितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री एकाग्र-चित्त-निर्ध्यातायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री एषणा-रहितादृतायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री एला-सुगन्धि-चिकुरायै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री एनः-कूट-विनाशिन्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री एक-भोगायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री एक-रसायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री एकैश्वर्य-प्रदायिन्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री एकात-पत्र-साम्राज्य-प्रदायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री एकान्त-पूजितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री एधमान-प्रभायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री एजदनेक-जगदीश्वर्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री एक-वीरादि-संसेव्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री एक-प्राभव-शालिन्यै नमः

।। मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।।

'चित्त'-रूपं पुष्पं समर्पयामि। 'प्राण'-रूपं धूपं समर्पयामि। 'तेजस्तत्त्व'-रूपं दीपं समर्पयामि। 'सुधाम्बुधि'-रूपं नैवेद्यं समर्पयामि। 'अनाहत-शब्द'-रूप-घण्टा-वादनं समर्पयामि। 'वायु-तत्त्व'-रूपं चामरं समर्पयामि। 'इन्द्रिय-कर्माणि मनश्चाञ्चल्य'-रूपं नृत्यं समर्पयामि।
'अमाय-अनहङ्कार-अराग-अमद-अमोह-अदम्भ-अद्वेष-अक्षोभ-अमात्सर्य-अलोभ-अहिंसा-इन्द्रिय-निग्रह-दया-क्षमा-ज्ञान'-रूपाणि पञ्च-दश-पुष्पाणि समर्पयामि।

।। काम-क्रोध-रूपं बलिं समर्पयामि ।।

श्री कीर्ति-लक्ष्मी-पूजा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

अश्व-पूर्वां रथ-मध्यां, हस्ति-नाद-प्रबोधिनीम् । श्रियं देवीमुपह्वये, श्रीर्मा देवी जुषताम् ।।

श्रीसूक्त-संस्तुतां 'इ'-कार प्राकृतिक 'श्रीपूषा'-कलात्मिकां,
'श्रीनित्य-क्लिन्ना'-नित्या-स्वरूपिणीं 'श्रीसर्व-मङ्गल-प्रदायक'-चक्रेश्वरीं,
'श्रीअहङ्काराकर्षिणी'-शक्ति-रूपिणीं 'श्रीमाधव'-वक्ष-स्थल-निवासिनीं,
सर्व-मङ्गल-देवतां 'श्रीकीर्ति-लक्ष्मीं'
ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।
पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, मधुपर्कं समर्पयामि। पुनः आचमनीयं समर्पयामि।
स्नानं, वस्त्रं, आभूषणं, गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि। पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ई-कार-रूपायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ईशित्र्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ईप्सितार्थ-प्रदायिन्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ईदृगित्यविनिर्देश्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ईश्वरत्व-विधायिन्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ईशानादि-ब्रह्म-मय्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ईशित्वाद्यष्ट-सिद्धिदायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ईक्षित्र्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ईक्षण-सृष्टाण्ड-कोटये नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ईश्वर-वल्लभायै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ईडितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ईश्वरार्द्धाङ्ग-शरीरायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ईशाधि-देवतायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ईश्वर-प्रेरण-कर्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ईश-ताण्डव-साक्षिण्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ईश्वरोत्सङ्ग-निलयायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ईति-बाधा-विनाशिन्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ईहा-विरहितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीईश-शक्त्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ईषत्-स्मिताननायै नमः

।। मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।।

'चित्त'-रूपं पुष्पं समर्पयामि। 'प्राण'-रूपं धूपं समर्पयामि। 'तेजस्तत्त्व'-रूपं दीपं समर्पयामि। 'सुधाम्बुधि'-रूपं नैवेद्यं समर्पयामि। 'अनाहत-शब्द'-रूप-घण्टा-वादनं समर्पयामि। 'वायु-तत्त्व'-रूपं चामरं समर्पयामि। 'इन्द्रिय-कर्माणि मनश्चाञ्चल्य'-रूपं नृत्यं समर्पयामि।
'अमाय-अनहङ्कार-अराग-अमद-अमोह-अदम्भ-अद्वेष-अक्षोभ-अमात्सर्य-अलोभ-अहिंसा-इन्द्रिय-निग्रह-दया-क्षमा-ज्ञान'-रूपाणि पञ्च-दश-पुष्पाणि समर्पयामि।
।। काम-क्रोध-रूपं बलिं समर्पयामि ।।

श्री वीर-लक्ष्मी-पूजा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

कांसोऽस्मि तां हिरण्य-प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्म-वर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

श्रीसूक्त-संस्तुतां 'ई'-कार प्राकृतिक 'श्रीतुष्टि'-कलात्मिकां,
'श्रीभेरुण्डा'-नित्या-स्वरूपिणीं 'श्रीसर्व-संक्षोभण'-चक्रेश्वरीं,
'श्रीशब्दाकर्षिणी'-शक्ति-रूपिणीं 'श्रीगोविन्द'-वक्ष-स्थल-निवासिनीं,
सर्व-मङ्गल-देवतां 'श्रीवीर-लक्ष्मीं'
ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।
पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, मधुपर्कं समर्पयामि। पुनः आचमनीयं समर्पयामि।
स्नानं, वस्त्रं, आभूषणं, गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि। पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ल-कार-रूपायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ललितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लक्ष्मी-वाणी-निषेवितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लाकिन्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ललना-रूपायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लसद्-दाडिम-पाटलायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ललन्तिका-लसत्-फालायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ललाट-नयनार्चितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लक्षणोज्ज्वल-दिव्याङ्ग्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लक्ष-कोट्यण्ड-नायिकायै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लक्ष्यार्थायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लक्षणागम्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्ध-कामायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लता-तनवे नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ललाम-राजदलिकायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लम्बि-मुक्ता-लताञ्चितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लम्बोदर-प्रसवे नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लभ्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लज्जाढ्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लय-वर्जितायै नमः

।। मन्त्र-पुष्पाञ्जलि समर्पयामि ।।

'चित्त'-रूपं पुष्पं समर्पयामि। 'प्राण'-रूपं धूपं समर्पयामि। 'तेजस्तत्त्व'-रूपं दीपं समर्पयामि। 'सुधाम्बुधि'-रूपं नैवेद्यं समर्पयामि। 'अनाहत-शब्द'-रूप-घण्टा-वादनं समर्पयामि। 'वायु-तत्त्व'-रूपं चामरं समर्पयामि। 'इन्द्रिय-कर्माणि मनश्चाञ्चल्य'-रूपं नृत्यं समर्पयामि।
'अमाय-अनहङ्कार-अराग-अमद-अमोह-अदम्भ-अद्वेष-अक्षोभ-अमात्सर्य-अलोभ-अहिंसा-इन्द्रिय-निग्रह-दया-क्षमा-ज्ञान'-रूपाणि पञ्च-दश-पुष्पाणि समर्पयामि।

।। काम-क्रोध-रूपं बलिं समर्पयामि ।।

श्री विजय-लक्ष्मी-पूजा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव-जुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ।।

श्रीसूक्त-संस्तुतां 'उ'-कार प्राकृतिक 'श्रीपुष्टि'-कलात्मिकां,
'श्रीवह्नि-वासिनी'-नित्या-स्वरूपिणीं 'श्रीसर्व-दुःख-विमोचन'-चक्रेश्वरीं,
'श्रीस्पर्शाकर्षिणी'-शक्ति-रूपिणीं 'श्रीविष्णु'-वक्ष-स्थल-निवासिनीं,
सर्व-मङ्गल-देवतां 'श्रीविजय-लक्ष्मीं'
ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।
पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, मधुपर्कं समर्पयामि। पुनः आचमनीयं समर्पयामि।
स्नानं, वस्त्रं, आभूषणं, गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि। पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-रूपायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-निलयायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-पद-प्रियायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-वीजायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-मन्त्रायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-लक्षणायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-जप-सुप्रीतायै नमः ॐ
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-मत्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-विभूषणायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-शीलायै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-पदाराध्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-गर्भायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-पदाभिधायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-वाच्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-पूज्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-पीठिकायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-वेद्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-चिन्त्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-शरीरिण्यै नमः

।। मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।।

'चित्त'-रूपं पुष्पं समर्पयामि। 'प्राण'-रूपं धूपं समर्पयामि। 'तेजस्तत्त्व'-रूपं दीपं समर्पयामि। 'सुधाम्बुधि'-रूपं नैवेद्यं समर्पयामि। 'अनाहत-शब्द'-रूप-घण्टा-वादनं समर्पयामि। 'वायु-तत्त्व'-रूपं चामरं समर्पयामि। 'इन्द्रिय-कर्माणि मनश्चाञ्चल्य'-रूपं नृत्यं समर्पयामि।
'अमाय-अनहङ्कार-अराग-अमद-अमोह-अदम्भ-अद्वेष-अक्षोभ-अमात्सर्य-अलोभ-अहिंसा-इन्द्रिय-निग्रह-दया-क्षमा-ज्ञान'-रूपाणि पञ्च-दश-पुष्पाणि समर्पयामि।
।। काम-क्रोध-रूपं बलिं समर्पयामि ।।

श्री सन्तान-लक्ष्मी-पूजा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

आदित्य-वर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ।।
श्रीसूक्त-संस्तुतां 'ऊ'-कार प्राकृतिक 'श्रीरति'-कलात्मिकां,
'श्रीमहा-वज्रेश्वरी'-नित्या-स्वरूपिणीं 'श्रीसर्व-सम्पद्-प्रदायक'-चक्रेश्वरीं,
'श्रीरूपाकर्षिणी'-शक्ति-रूपिणीं 'श्रीमधुसूदन'-वक्ष-स्थल-निवासिनीं,
सर्व-मङ्गल-देवतां 'श्रीसन्तान-लक्ष्मीं'
ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।
पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, मधुपर्कं समर्पयामि। पुनः आचमनीयं समर्पयामि।
स्नानं, वस्त्रं, आभूषणं, गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि। पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह-कार-रूपायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हल-धृक्-पूजितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हरिणेक्षणायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हरि-प्रियायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हराराध्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हरि-ब्रह्मेन्द्र-वन्दितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हयारूढा-सेविताङ्घ्र्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हय-मेध-समर्चितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हर्यक्ष-वाहनायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हंस-वाहनायै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हत-दानवायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हत्यादि-पाप-शमन्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हरिदश्वादि-सेवितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हस्ति-कुम्भोतुङ्ग-कुचायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हस्ति-कृत्ति-प्रियाङ्गनायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हरिद्रा-कुंकुमा-दिग्धायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हर्यश्वाद्यमरार्चितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हरि-केश-सख्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हादि-विद्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हाला-मदोल्लसायै नमः

।। मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।।

'चित्त'-रूपं पुष्पं समर्पयामि। 'प्राण'-रूपं धूपं समर्पयामि। 'तेजस्तत्त्व'-रूपं दीपं समर्पयामि।
'सुधाम्बुधि'-रूपं नैवेद्यं समर्पयामि। 'अनाहत-शब्द'-रूप-घण्टा-वादनं समर्पयामि।
'वायु-तत्त्व'-रूपं चामरं समर्पयामि। 'इन्द्रिय-कर्माणि मनश्चाञ्चल्य'-रूपं नृत्यं समर्पयामि।
'अमाय-अनहङ्कार-अराग-अमद-अमोह-अदम्भ-अद्वेष-अक्षोभ-अमात्सर्य-अलोभ-
अहिंसा-इन्द्रिय-निग्रह-दया-क्षमा-ज्ञान'-रूपाणि पञ्च-दश-पुष्पाणि समर्पयामि।
।। काम-क्रोध-रूपं बलिं समर्पयामि ।।

श्री मेधा-लक्ष्मी-पूजा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

उपैतु मां देव-सखः, कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्, कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे।।

श्रीसूक्त-संस्तुतां 'ऋ'-कार प्राकृतिक 'श्रीधृति'-कलात्मिकां,
'श्रीशिव-दूती'-नित्या-स्वरूपिणीं 'श्रीसर्व-रक्षा-कर'-चक्रेश्वरीं,
'श्रीरसाकर्षिणी'-शक्ति-रूपिणीं 'श्रीत्रि-विक्रम'-वक्ष-स्थल-निवासिनीं,
सर्व-मङ्गल-देवतां 'श्रीमेधा-लक्ष्मीं'
ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।
पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, मधुपर्कं समर्पयामि। पुनः आचमनीयं समर्पयामि।
स्नानं, वस्त्रं, आभूषणं, गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि। पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री स-कार-रूपायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्वज्ञायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्वेश्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्व-मङ्गलायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्व-कर्त्र्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्व-भर्त्र्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्व-हन्त्र्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सनातनायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्वानवद्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्वाङ्ग-सुन्दर्यै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्व-साक्षिण्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्वात्मिकायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्व-सौख्य-दात्र्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्व-विमोहिन्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्वाधारायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्व-गतायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्वावगुण-वर्जितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्वारुणायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्व-मात्रे नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्व-भूषण-भूषितायै नमः

।। मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।।

'चित्त'-रूपं पुष्पं समर्पयामि। 'प्राण'-रूपं धूपं समर्पयामि। 'तेजस्तत्त्व'-रूपं दीपं समर्पयामि। 'सुधाम्बुधि'-रूपं नैवेद्यं समर्पयामि। 'अनाहत-शब्द'-रूप-घण्टा-वादनं समर्पयामि। 'वायु-तत्त्व'-रूपं चामरं समर्पयामि। 'इन्द्रिय-कर्माणि मनश्चाञ्चल्य'-रूपं नृत्यं समर्पयामि।
'अमाय-अनहङ्कार-अराग-अमद-अमोह-अदम्भ-अद्वेष-अक्षोभ-अमात्सर्य-अलोभ-अहिंसा-इन्द्रिय-निग्रह-दया-क्षमा-ज्ञान'-रूपाणि पञ्च-दश-पुष्पाणि समर्पयामि।

।। काम-क्रोध-रूपं बलिं समर्पयामि ।।

श्री विद्या-लक्ष्मी-पूजा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् । अभूतिमसमृद्धिं च, सर्वां निर्णुद मे गृहात् ।।

श्रीसूक्त-संस्तुतां 'ॠ'-कार प्राकृतिक 'श्रीशशिनी'-कलात्मिकां,
'श्रीत्वरिता'-नित्या-स्वरूपिणीं 'श्रीसर्व-मृत्यु-प्रशमनी'-चक्रेश्वरीं,
'श्रीगन्धाकर्षिणी'-शक्ति-रूपिणीं 'श्रीवामन'-वक्ष-स्थल-निवासिनीं,
सर्व-मङ्गल-देवतां 'श्राविद्या-लक्ष्मीं'
ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।
पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, मधुपर्कं समर्पयामि। पुनः आचमनीयं समर्पयामि।
स्नानं, वस्त्रं, आभूषणं, गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि। पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री क-कारार्थायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री काल-हन्त्र्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामेश्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामितार्थदायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री काम-सञ्जीवन्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कल्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कठिन-स्तन-मण्डलायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री करभोरवे नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कला-नाथ-मुख्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कच-जिताम्बुदायै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कटाक्ष-स्यन्दि-करुणायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कपालि-प्राण-नायिकायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कारुण्य-विग्रहायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कान्तायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कान्ति-धूत-जपावल्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कलाऽऽलापायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कम्बु-कण्ठ्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कर-निर्जित-पल्लवायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कल्प-वल्ली-सम-भुजायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कस्तूरी-तिलकाञ्चितायै नमः

।। मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।।

'चित्त'-रूपं पुष्पं समर्पयामि। 'प्राण'-रूपं धूपं समर्पयामि। 'तेजस्तत्त्व'-रूपं दीपं समर्पयामि। 'सुधाम्बुधि'-रूपं नैवेद्यं समर्पयामि। 'अनाहत-शब्द'-रूप-घण्टा-वादनं समर्पयामि। 'वायु-तत्त्व'-रूपं चामरं समर्पयामि। 'इन्द्रिय-कर्माणि मनश्चाञ्चल्य'-रूपं नृत्यं समर्पयामि।
'अमाय-अनहङ्कार-अराग-अमद-अमोह-अदम्भ-अद्वेष-अक्षोभ-अमात्सर्य-अलोभ-अहिंसा-इन्द्रिय-निग्रह-दया-क्षमा-ज्ञान'-रूपाणि पञ्च-दश-पुष्पाणि समर्पयामि।
।। काम-क्रोध-रूपं बलिं समर्पयामि ।।

श्री तुष्टि-लक्ष्मी-पूजा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

गन्ध द्वारां दुराधर्षां, नित्य-पुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्व-भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

श्रीसूक्त-संस्तुतां 'ऌ'-कार प्राकृतिक 'श्रीचन्द्रिका'-कलात्मिकां,
'श्रीकुल-सुन्दरी'-नित्या-स्वरूपिणीं 'श्रीसर्व-जन-वशङ्करी'-चक्रेश्वरीं,
'श्रीचित्ताकर्षिणी'-शक्ति-रूपिणीं 'श्रीश्रीधर'-वक्ष-स्थल-निवासिनीं,
सर्व-मङ्गल-देवतां 'श्रीतुष्टि-लक्ष्मीं'
ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।
पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, मधुपर्कं समर्पयामि। पुनः आचमनीयं समर्पयामि।
स्नानं, वस्त्रं, आभूषणं, गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि। पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह-कारार्थायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हंस-गत्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हाटकाऽऽभरणोज्ज्वलायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हार-हारि-कुचाभोगायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हाकिन्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हल्य-वर्जितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हरित्-पति-समाराध्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हठात्-कार-हताऽसुरायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हर्ष-प्रदायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हविर्भोक्त्र्यै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हार्द-सन्तमसापहायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हल्लीस-लास्य-सन्तुष्टायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हंस-मन्त्रार्थ-रूपिण्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हानोपादान-निर्मुक्तायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हर्षिण्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हरि-सोदर्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हा-हा-हू-हू-मुख-स्तुत्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हानि-वृद्धि-विवर्जितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हय्यङ्ग-वीण-हृदयायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हरि-गोपारुणांशुकायै नमः

।। मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।।

'चित्त'-रूपं पुष्पं समर्पयामि। 'प्राण'-रूपं धूपं समर्पयामि। 'तेजस्तत्त्व'-रूपं दीपं समर्पयामि। 'सुधाम्बुधि'-रूपं नैवेद्यं समर्पयामि। 'अनाहत-शब्द'-रूप-घण्टा-वादनं समर्पयामि। 'वायु-तत्त्व'-रूपं चामरं समर्पयामि। 'इन्द्रिय-कर्माणि मनश्चाञ्चल्य'-रूपं नृत्यं समर्पयामि।
'अमाय-अनहङ्कार-अराग-अमद-अमोह-अदम्भ-अद्वेष-अक्षोभ-अमात्सर्य-अलोभ-अहिंसा-इन्द्रिय-निग्रह-दया-क्षमा-ज्ञान'-रूपाणि पञ्च-दश-पुष्पाणि समर्पयामि।
।। काम-क्रोध-रूपं बलिं समर्पयामि ।।

श्री पुष्टि-लक्ष्मी-पूजा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

मनसः काममाकूतिं, वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य, मयि श्रीः श्रयतां यशः ।।

श्रीसूक्त-संस्तुतां 'ॡ'-कार प्राकृतिक 'श्रीकान्ति'-कलात्मिकां,
'श्रीनित्या'-नित्या-स्वरूपिणीं 'श्रीसर्व-सिद्धि-प्रदायक'-चक्रेश्वरीं,
'श्रीधैर्याकर्षिणी'-शक्ति-रूपिणीं 'श्रीहृषीकेश'-वक्ष-स्थल-निवासिनीं,
सर्व-मङ्गल-देवतां 'श्रीपुष्टि-लक्ष्मीं'
ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।
पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, मधुपर्कं समर्पयामि। पुनः आचमनीयं समर्पयामि।
स्नानं, वस्त्रं, आभूषणं, गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि। पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ल-काराख्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लता-पूज्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लय-स्थित्युद्भवेश्वर्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लास्य-दर्शन-सन्तुष्टायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लाभालाभ-विवर्जितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लंघ्येतराज्ञायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लावण्य-शालिन्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लघु-सिद्धिदायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लाक्षा-रस-सवर्णाभायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लक्ष्मणाग्रज-पूजितायै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लभ्येतरायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लभ्य-भक्ति-सुलभायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लाङ्गलायुधायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लग्न-चामर-हस्त-श्री-शारदा-परिवीजितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लज्जा-पद-समाराध्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लम्पटायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लकुलेश्वर्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्ध-मानायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्ध-रसायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्ध-सम्पत्-समुन्नत्यै नमः

।। मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।।

'चित्त'-रूपं पुष्पं समर्पयामि। 'प्राण'-रूपं धूपं समर्पयामि। 'तेजस्तत्त्व'-रूपं दीपं समर्पयामि। 'सुधाम्बुधि'-रूपं नैवेद्यं समर्पयामि। 'अनाहत-शब्द'-रूप-घण्टा-वादनं समर्पयामि। 'वायु-तत्त्व'-रूपं चामरं समर्पयामि। 'इन्द्रिय-कर्माणि मनश्चाञ्चल्य'-रूपं नृत्यं समर्पयामि।
'अमाय-अनहङ्कार-अराग-अमद-अमोह-अदम्भ-अद्वेष-अक्षोभ-अमात्सर्य-अलोभ-अहिंसा-इन्द्रिय-निग्रह-दया-क्षमा-ज्ञान'-रूपाणि पञ्च-दश-पुष्पाणि समर्पयामि।

।। काम-क्रोध-रूपं बलिं समर्पयामि ।।

श्री प्रज्ञा-लक्ष्मी-पूजा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

कर्दमेन प्रजा-भूता, मयि सम्भव-कर्दम । श्रियं वासय मे कुले, मातरं पद्म-मालिनीम् ।।

श्रीसूक्त-संस्तुतां 'ए'-कार प्राकृतिक 'श्रीज्योत्सना'-कलात्मिकां,
'श्रीनील-पताका'-नित्या-स्वरूपिणीं 'श्रीसर्व-विघ्न-प्रशमनी'-चक्रेश्वरीं,
'श्रीस्मृत्याकर्षिणी'-शक्ति-रूपिणीं 'श्रीपद्म-नाभ'-वक्ष-स्थल-निवासिनीं,
सर्व-मङ्गल-देवतां 'श्रीप्रज्ञा-लक्ष्मीं'
ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।
पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, मधुपर्कं समर्पयामि। पुनः आचमनीयं समर्पयामि।
स्नानं, वस्त्रं, आभूषणं, गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि। पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कारिण्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-माद्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-मध्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-शिखा-मणयै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीङ्कार-कुण्डाग्नि-शिखायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रींकार-शशि-चन्द्रिकायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रींकार-भास्कर-रुचये नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रींकाराम्भोद-चञ्चलायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रींकार-कन्दांकुरिकायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रींकारैक-परायणायै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रींकार-दीर्घिका-हंस्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रींकारोद्यान-केकिन्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रींकारारण्य-हरिण्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रींकारावाल-वल्लर्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रींकार-पञ्जर-शुक्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रींकाराङ्गण-दीपिकायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रींकार-कन्दरा-सिंह्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रींकाराम्भोज-भृङ्गिकायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रींकार-सुमनो-माध्व्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रींकार-तरु-मञ्जर्यै नमः

।। मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।।

'चित्त'-रूपं पुष्पं समर्पयामि। 'प्राण'-रूपं धूपं समर्पयामि। 'तेजस्तत्त्व'-रूपं दीपं समर्पयामि। 'सुधाम्बुधि'-रूपं नैवेद्यं समर्पयामि। 'अनाहत-शब्द'-रूप-घण्टा-वादनं समर्पयामि। 'वायु-तत्त्व'-रूपं चामरं समर्पयामि। 'इन्द्रिय-कर्माणि मनश्चाञ्चल्य'-रूपं नृत्यं समर्पयामि।
'अमाय-अनहङ्कार-अराग-अमद-अमोह-अदम्भ-अद्वेष-अक्षोभ-अमात्सर्य-अलोभ-अहिंसा-इन्द्रिय-निग्रह-दया-क्षमा-ज्ञान'-रूपाणि पञ्च-दश-पुष्पाणि समर्पयामि।
।। काम-क्रोध-रूपं बलिं समर्पयामि ।।

श्री शक्ति-लक्ष्मी-पूजा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

आपः सृजन्तु स्निग्धानि, चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं, श्रियं वासय मे कुले ।।

श्रीसूक्त-संस्तुतां 'ऐ'-कार प्राकृतिक 'श्री श्री'-कलात्मिकां,
'श्रीविजया'-नित्या-स्वरूपिणीं 'श्रीसर्व-भोग-प्रदायक'-चक्रेश्वरीं,
'श्रीनामाकर्षिणी'-शक्ति-रूपिणीं 'श्रीदामोदर'-वक्ष-स्थल-निवासिनीं,
सर्व-मङ्गल-देवतां 'श्रीशक्ति-लक्ष्मीं'
ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।
पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, मधुपर्कं समर्पयामि। पुनः आचमनीयं समर्पयामि।
स्नानं, वस्त्रं, आभूषणं, गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि। पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री स-काराख्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सम-रसायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सकलागम-संस्तुतायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्व-वेदान्त-तात्पर्य-भूम्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सदसदाश्रयायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सकलायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सच्चिदानन्दायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री साध्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सद्-गति-दायिन्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सनकादि-मुनि-ध्येयायै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सदा-शिव-कुटुम्बिन्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सकलाधिष्ठान-रूपायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सत्य-रूपायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री समाकृतये नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्व-प्रपञ्च-निर्मात्र्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री समनाधिक-वर्जितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्वोत्तुङ्गायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सङ्ग-हीनायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री श्रीसगुणायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सकलेष्टदायै नमः

।। मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।।

'चित्त'-रूपं पुष्पं समर्पयामि। 'प्राण'-रूपं धूपं समर्पयामि। 'तेजस्तत्त्व'-रूपं दीपं समर्पयामि। 'सुधाम्बुधि'-रूपं नैवेद्यं समर्पयामि। 'अनाहत-शब्द'-रूप-घण्टा-वादनं समर्पयामि। 'वायु-तत्त्व'-रूपं चामरं समर्पयामि। 'इन्द्रिय-कर्माणि मनश्चाञ्चल्य'-रूपं नृत्यं समर्पयामि।
'अमाय-अनहङ्कार-अराग-अमद-अमोह-अदम्भ-अद्वेष-अक्षोभ-अमात्सर्य-अलोभ-अहिंसा-इन्द्रिय-निग्रह-दया-क्षमा-ज्ञान'-रूपाणि पञ्च-दश-पुष्पाणि समर्पयामि।

।। काम-क्रोध-रूपं बलिं समर्पयामि ।।

श्री शान्ति-लक्ष्मी-पूजा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं, पिङ्गलां पद्म-मालिनीम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो म आवह ।।

श्रीसूक्त-संस्तुतां 'ओ'-कार प्राकृतिक 'श्रीप्रीति'-कलात्मिकां,
'श्रीसर्व-मङ्गला'-नित्या-स्वरूपिणीं 'श्रीसर्वानन्द-मय'-चक्रेश्वरीं,
'श्रीवीजाकर्षिणी'-शक्ति-रूपिणीं 'श्रीअच्युत'-वक्ष-स्थल-निवासिनीं,
सर्व-मङ्गल-देवतां 'श्रीशान्ति-लक्ष्मीं'
ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।
पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, मधुपर्कं समर्पयामि। पुनः आचमनीयं समर्पयामि।
स्नानं, वस्त्रं, आभूषणं, गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि। पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री क-कारिण्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री काव्य-लोलायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामेश्वर-मनोहरायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामेश्वर-प्राण-नाड्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामेशोत्सङ्ग-वासिन्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामेश्वरालिङ्गितांग्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामेश्वर-सुख-प्रदायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामेश्वर-प्राणयिन्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामेश्वर-विलासिन्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामेश्वर-तपः-सिद्ध्यै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामेश्वर-मनः-प्रियायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामेश्वर-प्राण-नाथायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामेश्वर-विमोहिन्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामेश्वर-ब्रह्म-विद्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामेश्वर-गृहेश्वर्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामेश्वराह्लाद-कर्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामेश्वर-महेश्वर्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामेश्वर-कामेश्वर्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री काम-कोटि-निलयायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कांक्षितार्थदायै नमः

।। मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।।

'चित्त'-रूपं पुष्पं समर्पयामि। 'प्राण'-रूपं धूपं समर्पयामि। 'तेजस्तत्त्व'-रूपं दीपं समर्पयामि। 'सुधाम्बुधि'-रूपं नैवेद्यं समर्पयामि। 'अनाहत-शब्द'-रूप-घण्टा-वादनं समर्पयामि। 'वायु-तत्त्व'-रूपं चामरं समर्पयामि। 'इन्द्रिय-कर्माणि मनश्चाञ्चल्य'-रूपं नृत्यं समर्पयामि।

'अमाय-अनहङ्कार-अराग-अमद-अमोह-अदम्भ-अद्वेष-अक्षोभ-अमात्सर्य-अलोभ-अहिंसा-इन्द्रिय-निग्रह-दया-क्षमा-ज्ञान'-रूपाणि पञ्च-दश-पुष्पाणि समर्पयामि।

।। काम-क्रोध-रूपं बलिं समर्पयामि ।।

श्री साम्राज्य-लक्ष्मी-पूजा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं, सुवर्णां हेम-मालिनीम् । सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो म आवह ।।

श्रीसूक्त-संस्तुतां 'औ'-कार प्राकृतिक 'श्रीअङ्गदा'-कलात्मिकां,
'श्रीज्वाला-मालिनी'-नित्या-स्वरूपिणीं 'श्रीसर्वार्थ-साधक'-चक्रेश्वरीं,
'श्रीआत्माकर्षिणी'-शक्ति-रूपिणीं 'श्रीअनन्त'-वक्ष-स्थल-निवासिनीं,
सर्व-मङ्गल-देवतां 'श्रीसाम्राज्य-लक्ष्मीं'
ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।
पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, मधुपर्कं समर्पयामि। पुनः आचमनीयं समर्पयामि।
स्नानं, वस्त्रं, आभूषणं, गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि। पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ल-कारिण्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्ध-रूपायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्ध-धियै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्ध-वाञ्छितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्ध-पाप-मनोदूरायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्धाऽहङ्कार-दुर्गमायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्ध-शक्त्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्ध-देहायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्धैश्वर्य-समुन्नत्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्ध-वृद्ध्यै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्ध-लीलायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्ध-यौवन-शालिन्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्धातिशय-सर्वाङ्ग-सौन्दर्यायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्ध-विभ्रमायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्ध-रागायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्ध-पतये नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्ध-नानाऽऽगम-स्थित्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्ध-भोगायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्ध-सुखायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लब्ध-हर्षाभि-पूजितायै नमः

।। मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।।

'चित्त'-रूपं पुष्पं समर्पयामि। 'प्राण'-रूपं धूपं समर्पयामि। 'तेजस्तत्त्व'-रूपं दीपं समर्पयामि।
'सुधाम्बुधि'-रूपं नैवेद्यं समर्पयामि। 'अनाहत-शब्द'-रूप-घण्टा-वादनं समर्पयामि।
'वायु-तत्त्व'-रूपं चामरं समर्पयामि। 'इन्द्रिय-कर्माणि मनश्चाञ्चल्य'-रूपं नृत्यं समर्पयामि।
'अमाय-अनहङ्कार-अराग-अमद-अमोह-अदम्भ-अद्वेष-अक्षोभ-अमात्सर्य-अलोभ-
अहिंसा-इन्द्रिय-निग्रह-दया-क्षमा-ज्ञान'-रूपाणि पञ्च-दश-पुष्पाणि समर्पयामि।
।। काम-क्रोध-रूपं बलिं समर्पयामि ।।

श्री आरोग्य-लक्ष्मी-पूजा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

तां म आवह जात-वेदो लक्ष्मीमनप-गामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ।।

श्रीसूक्त-संस्तुतां 'अं'-कार प्राकृतिक 'श्रीपूर्णा'-कलात्मिकां,
'श्रीचित्रा'-नित्या-स्वरूपिणीं 'श्रीसर्व-रोग-हर'-चक्रेश्वरीं,
'श्रीअमृताकर्षिणी'-शक्ति-रूपिणीं 'श्रीवासुदेव'-वक्ष-स्थल-निवासिनीं,
सर्व-मङ्गल-देवतां 'श्रीआरोग्य-लक्ष्मीं'
ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।
पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, मधुपर्कं समर्पयामि। पुनः आचमनीयं समर्पयामि।
स्नानं, वस्त्रं, आभूषणं, गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि। पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-मूर्त्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-सौध-शृङ्ग-कपोतिकायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-दुग्धाब्धि-सुधायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-कमलेन्दिरायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-मणि-दीपार्च्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-तरु-शारिकायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-पेटक-मणये नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कारार्दश-बिम्बितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-कोशासि-लतायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-स्थान-नर्त्तक्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-शुक्तिका-मुक्ता-मणये नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-बोधितायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-मय-सौवर्ण-स्तम्भ-विद्रुम-पुत्रिकायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-वेदोपनिषदे नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-काराध्वर-दक्षिणायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-नन्दनाराम-नव-कल्पक-वल्लर्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-हिम-वद्-गङ्गायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कारार्णव-कौस्तुभायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-मन्त्र-सर्वस्वायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं-कार-पर-सौख्यदायै नमः

।। मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।।

'चित्त'-रूपं पुष्पं समर्पयामि। 'प्राण'-रूपं धूपं समर्पयामि। 'तेजस्तत्त्व'-रूपं दीपं समर्पयामि।
'सुधाम्बुधि'-रूपं नैवेद्यं समर्पयामि। 'अनाहत-शब्द'-रूप-घण्टा-वादनं समर्पयामि।
'वायु-तत्त्व'-रूपं चामरं समर्पयामि। 'इन्द्रिय-कर्माणि मनश्चाञ्चल्य'-रूपं नृत्यं समर्पयामि।
'अमाय-अनहङ्कार-अराग-अमद-अमोह-अदम्भ-अद्वेष-अक्षोभ-अमात्सर्य-अलोभ-अहिंसा-इन्द्रिय-निग्रह-दया-क्षमा-ज्ञान'-रूपाणि पञ्च-दश-पुष्पाणि समर्पयामि।

।। काम-क्रोध-रूपं बलिं समर्पयामि ।।

षोडश-लक्ष्मी-ऐक्य-रूपिणी

श्री ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-पूजा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

महा-लक्ष्म्यै विद्महे विष्णु-पत्न्यै धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।।
श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते ।
धान्यं धनं पशुं बहु-पुत्र-लाभं शत-संवत्सरं दीर्घमायुः।।

श्रीसूक्त-संस्तुतां 'अः'-कार प्राकृतिक 'पूर्णामृता'-कलात्मिकां,
'श्रीललिता'-महा-नित्या-स्वरूपिणीं 'श्रीत्रैलोक्य-मोहनादि'-समस्त-चक्रेश्वरीं,
'श्रीशरीराकर्षिणी'-शक्ति-रूपिणीं 'श्रीकेशवादि'-समस्त-देवता-वक्षः-स्थल-निवासिनीं,
सर्व-मङ्गल-देवतां समस्त-षोडश-लक्ष्मी-ऐक्य-रूपिणीं 'श्रीललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरीं'
ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।
पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, मधुपर्कं समर्पयामि।
पुनः आचमनीयं समर्पयामि।
स्नानं, वस्त्रं, आभूषणं, गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि।
पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।
'चित्त'-रूपं पुष्पं समर्पयामि।
'प्राण'-रूपं धूपं समर्पयामि।
'तेजस्तत्त्व'-रूपं दीपं समर्पयामि।
'सुधाम्बुधि'-रूपं नैवेद्यं समर्पयामि।
'अनाहत-शब्द'-रूप-घण्टा-वादनं समर्पयामि।
'वायु-तत्त्व'-रूपं चामरं समर्पयामि।
'इन्द्रिय-कर्माणि मनश्चाञ्चल्य'-रूपं नृत्यं समर्पयामि।
'अमाय-अनहङ्कार-अराग-अमद-अमोह-अदम्भ-अद्वेष-अक्षोभ-अमात्सर्य-अलोभ-
अहिंसा-इन्द्रिय-निग्रह-दया-क्षमा-ज्ञान'-रूपाणि पञ्च-दश-पुष्पाणि समर्पयामि।
।। काम-क्रोध-रूपं बलिं समर्पयामि ।।

क्षमा-प्रार्थना

मन्त्र-हीनं किया-हीनं, भक्ति-हीनं सुरेश्वरि! यत् पठितं मया देवि! परिपूर्णं तदस्तु मे।।

समर्पण

ॐ गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिर्मे भवतु देवि! त्वत्-प्रसादान् महेश्वरि! ।।

षोडश-लक्ष्मी-स्वरूपा
श्रीललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी के कुछ कठिन नामों का अर्थ

१. **श्री ककार-रूपायै नमः**:- अर्थात् 'श्री कादि-विद्या-रूपिणी प्रपञ्चेश्वरी' के लिए नमस्कार है।

२. **श्री कमनीयायै नमः**:- अर्थात् अत्यन्त मनो-हारिणी सुन्दर मूर्ति-स्वरूपा श्रीललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी के लिए नमस्कार है।

३. **श्री कला-वत्यै नमः**:- अर्थात् सब प्रकार की विद्याओं-मन्त्रोंवाली देवी के लिए नमस्कार है।

४. **श्री कमलाक्ष्यै नमः**:- अर्थात् महान् ऐश्वर्य-दायिनी देवी के लिए नमस्कार है।

५. **श्री कल्मषघ्न्यै नमः**:- अर्थात् पापों को नाश करनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

६. **श्री कन्दर्प-विद्यायै नमः**:- अर्थात् काम-देव द्वारा उपासिता देवी के लिए नमस्कार है।

७. **श्री कन्दर्प-जनकापाङ्ग-वीक्षणायै नमः**:- अर्थात् भोग-विलास के समस्त पदार्थों को नेत्रों के सङ्केत मात्र से उत्पन्न करनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

८. **श्री कर्पूर-वीटी-सौरभ्य-कल्लोलित-कुकुत्परायै नमः**:- अर्थात् कर्पूर-मिश्रित पान की सुगन्ध से समस्त दिशाओं को सुगन्धित करनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

९. **श्री कलि-दोष-हरायै नमः**:- अर्थात् कलियुग के पापों को नाश करनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

१०. **श्री कम्र-विग्रहायै नमः**:- अर्थात् गम्भीरता, धैर्य, अत्यन्त मनोरम स्वरूपवाली देवी के लिए नमस्कार है।

११. **श्री कर्मादि-साक्षिण्यै नमः**:- अर्थात् समस्त कर्मों की साक्षिणी देवी के लिए नमस्कार है।

१२. **श्री कारयित्र्यै नमः**:- अर्थात् सर्व कर्मों की प्रणेता देवी के लिए नमस्कार है।

१३. **श्री ए-कार-रूपायै नमः**:- अर्थात् परा-पश्यन्ती-मध्यमा-वैखरी-वाक्-स्वरूपा देवी के लिए नमस्कार है।

१४. **श्री एकाक्षर्यै नमः**:- अर्थात् सर्व-व्यापिनी देवी के लिए नमस्कार है।

१५. **श्री श्रीएकानेकाक्षराकृत्यै नमः**:- अर्थात् अनेक आकृतियों-वाली देवी के लिए नमस्कार है।

१६. **श्री एतत्-तदित्यनिर्देश्यायै नमः**:- अर्थात् काल और देश से परे देवी के लिए नमस्कार है।

१७. **श्री एकानन्द-चिदाकृत्यै नमः**:- अर्थात् अचिन्त्य प्रकाश एवं आनन्द-स्वरूपा देवी के लिए नमस्कार है।

१८. **श्री एवमित्यागमाबोध्यायै नमः**:- अर्थात् 'आगम'-वेदादि द्वारा भी अवर्णनीया देवी के लिए नमस्कार है।

१९. **श्री एक-भक्ति-मदर्चितायै नमः**:- अर्थात् एकाग्र मनवाले भक्तों द्वारा पूजित देवी के लिए नमस्कार है।

२०. **श्री एक-चित्त-निर्ध्यातायै नमः**:- अर्थात् एकाग्र चित्त से ध्यान में लाई जानेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

२१. **श्री एषणा-रहितादृतायै नमः**:- अर्थात् पुत्र की इच्छा, वित्त की इच्छा एवं देव-लोक की इच्छा से रहित साधकों द्वारा पूजित देवी के लिए नमस्कार है।

२२. श्री एला-सुगन्धि-चिकुरायै नमः- अर्थात् दिव्य गन्ध से ओत-प्रोत देवी के लिए नमस्कार है।

२३. श्री एनः-कूट-विनाशिन्यै नमः- अर्थात् पाप-समूह को नष्ट करनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

२४. श्री एक-भोगायै नमः- अर्थात् कामेश्वर (एक) से ऐक्य-भाव रखनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

२५. श्री एकैश्वर्य-प्रदायिन्यै नमः- अर्थात् अद्वैत-बोध को प्रदान करनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

२६. श्री एकातपत्र-साम्राज्य-प्रदायै नमः- अर्थात् आत्म-ज्ञान द्वारा सर्वोच्च पद प्रदान करनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

२७. श्री एधमान-प्रभायै नमः- अर्थात् ब्रह्म-तेंजवाली देवी के लिए नमस्कार है।

२८. श्री एजदनेक-जगदीश्वर्यै नमः- अर्थात् जगत् और चलायमान जीव की शासिका देवी के लिए नमस्कार है।

२९. श्री एक-प्राभव-शालिन्यै नमः- अर्थात् असीम प्रभुत्ववाली देवी के लिए नमस्कार है।

३०. श्री ई-कार-रूपायै नमः- अर्थात् श्री-रूपिणी देवी के लिए नमस्कार है।

३१. श्री ईशित्र्यै नमः- अर्थात् विश्व का सञ्चालन करनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

३२. श्री ईप्सितार्थ प्रदायिन्यै नमः- अर्थात् इच्छित वस्तुओं को प्रदान करनेवली देवी के लिए नमस्कार है।

३३. श्री ईदृगित्यविनिर्देश्यायै नमः- अर्थात् इन्द्रियों से अतीत देवी के लिए नमस्कार है।

३४. श्री ईश्वरत्व-विधायिन्यै नमः- अर्थात् ईश्वर से एकत्व करानेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

३५. श्री ईक्षित्र्यै नमः- अर्थात् साक्षी-रूप से हृदय-रूपी गुफा में रहनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

३६. श्री ईक्षण-सृष्टाण्ड-कोटये नमः- अर्थात् इच्छा मात्र से कोटि ब्रह्माण्डों की सृष्टि करनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

३७. श्री ईडितायै नमः- अर्थात् सर्व प्रकार से प्रशंसनीय देवी के लिए नमस्कार है।

३८. श्री ईशाधि-देवतायै नमः- अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र और ईश्वर को प्रेरणा देनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

३९. श्री ईति-बाधा-विनाशिन्यै नमः- अर्थात् ईश्वर-भय को विनाश करनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

४०. श्री ईषत्-स्मिताननायै नमः- अर्थात् सदा सु-प्रसन्ना मन्द मुस्कानवाली देवी के लिए नमस्कार है।

४१. श्री लक्ष्मी-वाणी-निषेवितायै नमः- अर्थात् लक्ष्मी और वाणी द्वारा सेवित देवी के लिए नमस्कार है।

४२. श्री लाकिन्यै नमः- अर्थात् सर्व-दुःख-नाशिनी ब्रह्म-ज्ञान-दायिनी देवी के लिए नमस्कार है।

४३. श्री लसद्-दाड़िम-पाटलायै नमः- अर्थात् ताजे खिले हुए अनार के फूल जैसी आभावाली देवी के लिए नमस्कार है।

४४. श्री ललन्तिका-लसत्-फालायै नमः- अर्थात् आभूषणों से सु-सज्जित ललाटवाली देवी के लिए नमस्कार है।

४५. श्री लक्ष-कोट्यण्ड-नायिकायै नमः- अर्थात् असंख्य ब्रह्माण्डों की नायिका देवी के लिए नमस्कार है।

४६. श्री लक्षणागम्यायै नमः:- अर्थात् लक्षणों से परे शुद्ध मूल चैतन्य-रूपा देवी के लिए नमस्कार है।

४७. श्री लता-तनवे नमः:- अर्थात् सर्वाभिष्ट-दायिनी देवी के लिए नमस्कार है।

४८. श्री ललाम-राजदलिकायै नमः:- अर्थात् कस्तूरी-तिलक से शोभित ललाटवाली देवी के लिए नमस्कार है।

४९. श्री लम्बि-मुक्ता-लताञ्चितायै नमः:- अर्थात् लटकती हुई मोतियों की लड़ी से शोभित मुकुटवाली देवी के लिए नमस्कार है।

५०. श्री लभ्यायै नमः:- अर्थात् संसारियों द्वारा दर्शित देवी के लिए नमस्कार है।

५१. श्री लय-वर्जितायै नमः:- अर्थात् विनाश से परे देवी के लिए नमस्कार है।

५२. श्री ह्रीं-कार-चिन्त्यायै नमः:- अर्थात् ह्रीं-कार का ध्यान करने से साक्षात्कार होनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

५३. श्री हल-धृक्-पूजितायै नमः:- अर्थात् भगवान् बलराम द्वारा पूजित देवी के लिए नमस्कार है।

५४. श्री हय-मेध-समर्चितायै नमः:- अर्थात् अश्वमेध यज्ञ से पूजित देवी के लिए नमस्कार है।

५५. श्री हर्यक्ष-वाहनायै नमः:- अर्थात् सिंह-वाहिनी देवी के लिए नमस्कार है।

५६. श्री हरिदश्वादि-सेवितायै नमः:- अर्थात् इन्द्र आदि देवताओं द्वारा पूजित देवी के लिए नमस्कार है।

५७. श्री हर्यश्वाद्यमरार्चितायै नमः:- अर्थात् भगवान् हयग्रीव द्वारा पूजित देवी के लिए नमस्कार है।

५८. श्री हरि-केश-सख्यै नमः:- अर्थात् भगवान् विष्णु की सखी देवी के लिए नमस्कार है।

५९. श्री सर्वानवद्यायै नमः:- अर्थात् ज्ञान और ऐश्वर्य से परिपूर्ण 'अविद्या से रहित देवी के लिए नमस्कार है।

६०. श्री सर्वारुणायै नमः:- अर्थात् ताँबे के समान रक्त-वर्णा देवी के लिए नमस्कार है।

६१. श्री क-कारार्थायै नमः:- अर्थात् ब्रह्म-रूपिणी देवी के लिए नमस्कार है।

६२. श्री कल्यायै नमः:- अर्थात् इच्छित वस्तु देनेवाली कामधेनु-स्वरूपा देवी के लिए नमस्कार है।

६३. श्री कच-जिताम्बुदायै नमः:- अर्थात् मेघों को लज्जित करनेवाले केशोंवाली देवी के लिए नमस्कार है।

६४. श्री कटाक्ष-स्यन्दि-करुणायै नमः:- अर्थात् करुणा-पूर्ण दृष्टिवाली देवी के लिए नमस्कार है।

६५. श्री कान्ति-धूत-जपावल्यै नमः:- अर्थात् लाल रङ्ग के जपा-पुष्पों को फीकी करनेवाली कान्ति से युक्त देवी के लिए नमस्कार है।

६६. श्री कलाऽऽलापायै नमः:- अर्थात् अत्यन्त मधुर-पूर्ण वाणीवाली देवी के लिए नमस्कार है।

६७. श्री ह-कारार्थायै नमः:- अर्थात् 'आकाश'-वीज (ह) द्वारा दर्शनीया देवी के लिए नमस्कार है।

६८. श्री हंस-मत्यै नमः:- अर्थात् सूर्य-चन्द्र की गति की अधीश्वरी देवी के लिए नमस्कार है।

६९. श्री हाटकाऽभरणोज्ज्वलायै नमः:- अर्थात् स्वर्णाभूषणों से देदीप्यमाना देवी के लिए नमस्कार है।

७०. **श्री हाकिन्यै नमः–** अर्थात् जन्म-मृत्यु के बन्धन को काटनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

७१. **श्री हल्य-वर्जितायै नमः–** अर्थात् कपट-रहिता देवी के लिए नमस्कार है।

७२. **श्री हार्द-सन्तमसापहायै नमः–** अर्थात् अज्ञान-रूपी अन्धकार को मिटानेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

७३. **श्री हानोपादान-निर्मुक्तायै नमः–** अर्थात् 'प्रिय' एवं 'अप्रिय' से मुक्त देवी के लिए नमस्कार है।

७४. **श्री हाहा-हूहू-मुख-स्तुत्यायै नमः–** अर्थात् 'हाहा' और 'हूहू' गन्धर्वों द्वारा स्तुति की गई देवी के लिए नमस्कार है।

७५. **श्री हय्यङ्ग-वीण-हृदयायै नमः–** अर्थात् मक्खन के समान कोमल हृदयवाली देवी के लिए नमस्कार है।

७६. **श्री हरि-गोपारुणांशुक्रायै नमः–** अर्थात् वर्षा-काल में उत्पन्न होनेवाले लाल रङ्ग के कीट जैसी आभावाली देवी के लिए नमस्कार है।

७७. **श्री ल-काराख्यायै नमः–** अर्थात् माया को नियन्त्रित रखनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

७८. **श्री लंघ्येतराज्ञायै नमः–** अर्थात् जिसकी आज्ञा का उल्लङ्घन नहीं किया जा सकता, उन देवी के लिए नमस्कार है।

७९. **श्री लभ्येतरायै नमः–** अर्थात् धर्म, अर्थ और काम को देनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

८०. **श्री लम्पटायै नमः–** अर्थात् छिपाने, ढँकने, मूँदने की शक्ति से युक्त देवी के लिए नमस्कार है।

८१. **श्री लकुलेश्वर्यै नमः–** अर्थात् जगत् का लय करनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

८२. **श्री लब्ध-मानायै नमः–** अर्थात् बड़ी-से-बड़ी एवं छोटी-से-छोटी विविध आकारवाली देवी के लिए नमस्कार है।

८३. **श्री ह्रीं-कारिण्यै नमः–** अर्थात् जगत् की कारण-भूता देवी के लिए नमस्कार है।

८४. **श्री ह्रीं-कार-कुण्डाग्नि-शिखायै नमः–** अर्थात् मन्त्रों द्वारा उपासिता देवी के लिए नमस्कार है।

८५. **श्री ह्रींकार-कन्दांकुरिकायै नमः–** अर्थात् शब्द-ब्रह्म-स्वरूपा 'ह्रीं'-कार'-रूपी 'कन्द' में 'अंकुर' के समान देवी के लिए नमस्कार है।

८६. **श्री ह्रींकार-दीर्घिका-हंस्यै नमः–** अर्थात् शब्द-मय संसार में नीर-क्षीर के विवेक को देनेवाली हंसिनी के समान देवी के लिए नमस्कार है।

८७. **श्री ह्रींकार-तरु-मञ्जर्यै नमः–** अर्थात् माया-वीज-रूपी वृक्ष के पुष्प-गुच्छ के समान आकर्षणवाली देवी के लिए नमस्कार है।

८८. **श्री स-काराख्यायै नमः–** अर्थात् सादि-विद्या-रूपिणी देवी के लिए नमस्कार है।

८९. **श्री सम-रसायै नमः–** अर्थात् सम-भाव से व्याप्त देवी के लिए नमस्कार है।

९०. **श्री सर्व-वेदान्त-तात्पर्य-भूम्यै नमः–** अर्थात् सभी महा-वाक्यों की सारांश-स्वरूपा देवी के लिए नमस्कार है।

९१. **श्री सदसदाश्रयायै नमः–** अर्थात् १. पृथ्वी, २. जल, ३. तेज-रूपी 'सत्त' और ४. वायु, ५. आकाश-रूपी 'असत्त'-दोनों को आश्रय देनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

९२. **श्री साध्यायै नमः–** अर्थात् महा-वाक्यों के श्रवण एवं अनुशीलन से प्रकट होनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

९३. श्री समनाधिक-वर्जितायै नमः- अर्थात् सर्वथा अनुपम, अद्वितीय देवी के लिए नमस्कार है।

९४. श्री सर्वोत्तुङ्गायै नमः- अर्थात् सर्व-श्रेष्ठ देवी के लिए नमस्कार है।

९५. श्री सङ्ग-हीनायै नमः- अर्थात् सर्वथा निर्लिप्त देवी के लिए नमस्कार है।

९६. श्री सकलेष्टदायै नमः- अर्थात् सर्व प्रकार की इच्छाओं को पूर्ण करनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

९७. श्री क-कारिण्यै नमः- अर्थात् ब्रह्म-स्वरूपा देवी के लिए नमस्कार है।

९८. श्री काव्य-लोलायै नमः- अर्थात् ऋषियों द्वारा रचित महा-काव्यों की स्तुतियों से प्रसन्न होनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

९९. श्री कामेश्वर-महेश्वर्यै नमः- अर्थात् असीम शक्तिवाली शासिका देवी के लिए नमस्कार है।

१००. श्री कामेश्वर-कामेश्वर्यै नमः- अर्थात् कामदेव द्वारा पूजिता कादि-विद्या-स्वरूपिणी देवी के लिए नमस्कार है।

१०१. श्री कांक्षितार्थदायै नमः- अर्थात् वाञ्छित वस्तुओं को प्रदान करनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

१०२. श्री लब्ध-रूपायै नमः- अर्थात् 'नाम' और 'रूप' वाली देवी के लिए नमस्कार है।

१०३. श्री लब्ध-धियै नमः- अर्थात् मन की इच्छा और निर्णय लेने की शक्ति प्रदान करनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

१०४. श्री लब्ध-वाञ्छितायै नमः- अर्थात् सर्व वाञ्छित प्राप्त देवी के लिए नमस्कार है।

१०५. श्री लब्ध-पाप-मनोदूरायै नमः- अर्थात् पापी मनवालों की पहुँच से परे देवी के लिए नमस्कार है।

१०६. श्री लब्धाऽहङ्कार-दुर्गमायै नमः- अर्थात् अहङ्कारियों के लिए अप्राप्या देवी के लिए नमस्कार है।

१०७. श्री लब्ध-शक्त्यै नमः- अर्थात् सर्व-व्यापिनी माया-शक्ति देवी के लिए नमस्कार है।

१०८. श्री लब्ध-देहायै नमः- अर्थात् स्वेच्छा से रूप धारण करनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

१०९. श्री लब्धैश्वर्य-समुन्नत्यै नमः- अर्थात् सभी ऐश्वर्यों की ईश्वरी देवी के लिए नमस्कार है।

११०. श्री लब्ध-वृद्ध्यै नमः- अर्थात् सर्वतः पूर्ण देवी के लिए नमस्कार है।

१११. श्री लब्ध-लीलायै नमः- अर्थात् भाव-जगत् को सञ्चालित करनेवाली लीला-मय देवी के लिए नमस्कार है।

११२. श्री लब्ध-यौवन-शालिन्यै नमः- अर्थात् शाश्वत-यौवना देवी के लिए नमस्कार है।

११३. श्री लब्ध-विभ्रमायै नमः- अर्थात् सृष्टि का सम्पूर्ण कार्य बाल-क्रीड़ा-वत् सम्पन्न करनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

११४. श्री लब्ध-रागायै नमः- अर्थात् एक से अनेक बनने की इच्छा रखनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

११५. श्री लब्ध-पतये नमः- अर्थात् स्वयं अपनी इच्छा से कामेश्वर को पति के रूप में चुननेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

११६. श्री लब्ध-नानाऽऽगम-स्थितायै नमः- अर्थात् नाना प्रकार के आगम शास्त्रों की विधायिका देवी के लिए नमस्कार है।

११७. श्री लब्ध-भोगायै नमः- अर्थात् आनन्दानुभूति को देनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

११८. श्री लब्ध-हर्षाभि-पूजितायै नमः– अर्थात् हर्ष से परिपूर्ण देवी के लिए नमस्कार है।

११९. श्री ह्रींकार-मूर्त्यै नमः– अर्थात् माया (ह्रीं)–स्वरूपा देवी के लिए नमस्कार है।

१२०. श्री ह्रींकार-सौध-शृङ्ग-कपोतिकायै नमः– अर्थात् माया (ह्रीं)–रूपी राज–महल के शिखर पर कपोती के समान विराजमान सर्वथा आनन्दित एवं सर्व–मङ्गल–कारिणी देवी के लिए नमस्कार है।

१२१. श्री ह्रींङ्कार-दुग्धाब्धि-सुधायै नमः– अर्थात् माया (ह्रीं)–रूपी क्षीर–सागर में अमरत्व प्रदान करनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

१२२. श्री ह्रींङ्कार-कमलेन्दिरायै नमः– अर्थात् माया (ह्रीं)–रूपी कमल पर आसीना सुख–दायक देवी के लिए नमस्कार है।

१२३. श्री ह्रींङ्कार-मणि-दीपार्च्यै नमः– अर्थात् माया (ह्रीं)–रूपी मणि–दीप की अनन्त ज्योति के समान देवी के लिए नमस्कार है।

१२४. श्री ह्रींङ्कार-तरु-शारिकायै नमः– अर्थात् माया (ह्रीं)–रूपी वृक्ष के ऊपर बैठी हुई मानव बोली में बोलनेवाली मैना के समान ज्ञान देनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

१२५. श्री ह्रींङ्कार-पेटक-मणये नमः– अर्थात् माया (ह्रीं)–रूपी पेटी के अन्दर स्थित चारों तरफ प्रकाश फैलाती हुई मणि के सामन देवी के लिए नमस्कार है।

१२६. श्री ह्रींङ्कारादर्श-बिम्बितायै नमः– अर्थात् माया (ह्रीं)–रूपी दर्पण में बिम्ब के समान स्वतः प्रमाणित देवी के लिए नमस्कार है।

१२७. श्री ह्रींङ्कार-कोशासि-लतायै नमः– अर्थात् माया (ह्रीं)–रूपी म्यान में रखी हुई लम्बी कृपाण के समान महान् से महान् भय को दूर करनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

१२८. श्री ह्रींङ्कार-स्थान-नर्त्तक्यै नमः– अर्थात् माया (ह्रीं)–रूपी मञ्च पर स्थित नर्तकी के समान विविध नाम–रूप धारण करनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

१२९. श्री ह्रींङ्कार-शुक्तिका-मुक्ता-मणये नमः– अर्थात् माया (ह्रीं)–रूपी सीप में स्थित मोती के समान स्वतः प्रकाशमान देवी के लिए नमस्कार है।

१३०. श्री ह्रींङ्कार-बोधितायै नमः– अर्थात् माया–वीज (ह्रीं) से प्रकट होनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

१३१. श्री ह्रींङ्कार-मय-सौवर्ण-स्तम्भ-विद्रुम-पुत्रिकायै नमः– अर्थात् माया (ह्रीं)–रूपी स्वर्ण–खम्भे पर स्थित लाल रङ्ग के मूँगे (प्रवाल) की पुतली के सामन अपूर्व शोभावाली देवी के लिए नमस्कार है।

१३२. श्री ह्रींङ्कार-वेदोपनिषदे नमः– अर्थात् माया (ह्रीं)–वीज–रूपी वेद में ब्रह्म–विद्या के समान देवी के लिए नमस्कार है।

१३३. श्री ह्रींङ्काराध्वर-दक्षिणायै नमः– अर्थात् माया (ह्रीं)–रूपी यज्ञ की फल–दायिनी देवी के लिए नमस्कार है।

१३४. श्री ह्रींङ्कार-नन्दनाराम-नव-कल्पक-वल्लर्यै नमः– अर्थात् अत्यन्त आनन्द–दायक माया (ह्रीं)–रूपी वन की अत्यन्त कोमल, चारों तरफ फैली हुई लता के समान–सभी कामनाओं की पूर्ति करनेवाली, अत्यन्त कोमल हृदयवाली देवी के लिए नमस्कार है।

१३५. श्री ह्रींङ्कार-मन्त्र-सर्वस्वायै नमः– अर्थात् माया–वीज–मन्त्र (ह्रीं) की सर्वस्व सभी प्रकार की सिद्धियों को देनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

१३६. श्री ह्रींङ्कार-पर-सौख्यदायै नमः– अर्थात् माया–वीज–मन्त्र (ह्रीं) का जप करनेवालों को सभी प्रकार के सुख प्रदान करनेवाली देवी के लिए नमस्कार है।

श्री-यन्त्र (श्री-चक्र) का षोडश-दल

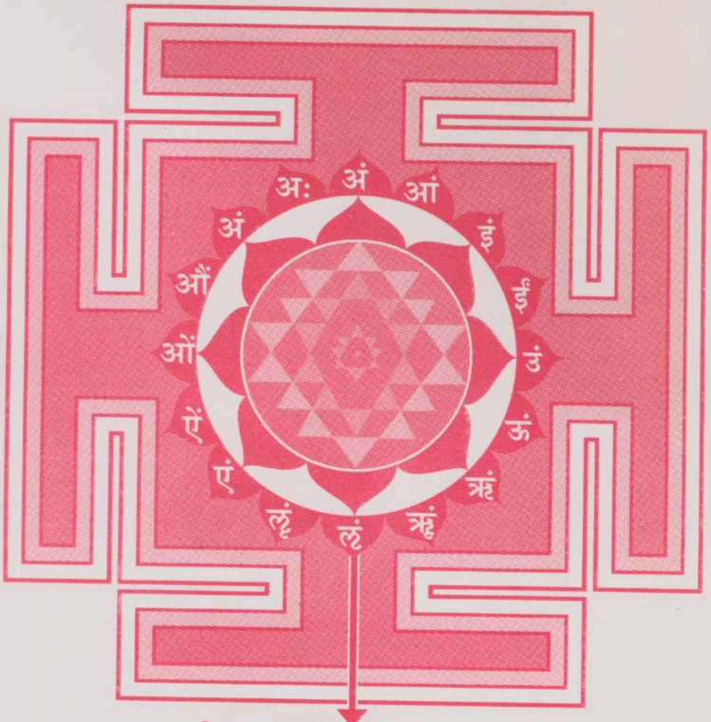

सर्व-आशा-परिपूरक-चक्र

श्री-यन्त्र (श्री-चक्र)-१.विन्दु, २. त्रिकोण, ३. अष्ट-कोण, ४. अन्तर्दशार,
५. बहिर्दशार, ६. चतुर्दशार, ७. अष्ट-दल, ८. षोडश-दल और ९. भू-पुर से बना है।
श्री-चक्र का षोडश-दल-'सर्व-आशा-परिपूरक-चक्र' कहलाता है।
यहाँ 'अमृताकर्षिणी' आदि १६ शक्तियों का पूजन होता है।
ये शक्तियाँ 'गुप्त-योगिनी' कहलाती हैं।
इनका वर्ण 'रक्त' है और ये अपने हाथों में 'पाश' तथा 'अंकुश' धारण करती हैं।
इन गुप्त-योगिनियों की कृपा से ही
'महा-त्रिपुर-सुन्दरी परा-भट्टारिका' की कृपा प्राप्त होती है।
'श्री-चक्र' के उक्त 'षोडश-दल' को ब्रह्माण्ड में 'सु-तल' और
मानव-शरीर में 'स्वाधिष्ठान-चक्र' माना गया है।
'श्री-चक्र' के 'षोडश-दल'-'सर्व-आशा-परिपूरक-चक्र' की साधना के अन्तर्गत
'स्वाधिष्ठान-चक्र' में भगवान् विष्णु के १६ स्वरूपों का ध्यान,
उनके वक्ष-स्थल-स्थित १६ लक्ष्मियों के 'ध्यान-पूजन-तर्पण' के साथ किया जाता है।

रजि० सं० ३२९८१/५७

अखिल विश्व-रूपी

"श्री-चक्र" का "षोडश-दल"

सम्पूर्ण विश्व को निर्मित करनेवाले षोडश मुख्य अवयवों को प्रकाशित करनेवाली १६ मुख्य शक्तियाँ

मानव-देह-स्थित १६ अवयवों की प्रकाशक शक्तियाँ

अं	कामाकर्षिणी	उं	स्पर्शाकर्षिणी	लृं	चित्ताकर्षिणी	ओं	वीजाकर्षिणी
आं	बुद्ध्याकर्षिणी	ऊं	रूपाकर्षिणी	ॡं	धैर्याकर्षिणी	औं	आत्माकर्षिणी
इं	अहङ्काराकर्षिणी	ऋं	रसाकर्षिणी	एं	स्मृत्याकर्षिणी	अं	अमृताकर्षिणी
ईं	शब्दाकर्षिणी	ॠं	गन्धाकर्षिणी	ऐं	नामाकर्षिणी	अः	शरीराकर्षिणी

प्रकाशक : श्रीऋतशील शर्मा, श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-६ ☎ ०९२३५९१००७१